अध्याय 17

1	प्रार्थना

समूह का अगुवा: प्रार्थना के साथ आप परमेश्वर के लिए चेले बनाने वाले इस कोर्स व अपने समूह को परमेश्वर के हाथों में सौंप दें।

2	आराधना (20 मिनट) [परमेश्वर की विशेषताएं] परमेश्वर विश्वासयोग्य है।

मनन।

प्रत्येक बाइबल के अनुच्छेद को ***पढ़कर*** उसकी ***व्याख्या*** करें तथा अराधना करने के लिए समूह के सदस्यों को कार्य ***सौंपें***।

1.निर्गमन 34:6–7। परमेश्वर निश्चय ही अपने तरस, प्रेम, अनुग्रह और क्षमा को प्रगट करने में विश्वासयोग्य है लेकिन जो लोग अपने पापों व दोषों के लिए पश्चाताप नहीं करते वह उनको कड़ाई से दण्ड भी देता है।

2. गिनती 23:19। बाइबल में परमेश्वर अपने वचनों और प्रतिज्ञाओं के प्रति विश्वासयोग्य है।

3. भजन संहिता 33:4–5। परमेश्वर सभी कामों में विश्वासयोग्य है। वह हमेशा सही व उचित कामों को ही करना पसन्द करता है। उसका प्रेम कभी असफल नहीं होगा।

4. भजन 33:10–11। परमेश्वर बाइबल में प्रगट की गयी प्रत्येक योजना और उद्देश्य के प्रति विश्वासयोग्य है।

5. भजन 40:1–3,9–10। परमेश्वर आपको दलदल के गड्ढ़े से बचाने के लिए विश्वासयोग्य है।

6. कुरिन्थियों 10:13। परमेश्वर हर परीक्षा से आपको बाहर निकालने के लिए मार्ग बनाता है।

7. फिलिप्पियों 1:6 (1 थिस्लुनिकियों 5:23–24)। परमेश्वर विश्वासयोग्य है और जो कार्य उसने आप में प्रारम्भ किया है वह उसे पूरा भी करेगा।

8. 2 तीमुथियुस 2:13। जब आप परमेश्वर के प्रति अविश्वासयोग्य हो जाते हैं, तब भी परमेश्वर (अपने न्याय में) विश्वासयोग्य बना रहता है।

9. इब्रानियों 10:23। परमेश्वर बाइबल में की गयी अपनी प्रतिज्ञाओं के प्रति पूरी तरह से विश्वासयोग्य है।

10. इब्रानियों 11:6 परमेश्वर यत्न के साथ उसकी खोज करने वालों को प्रतिफल देने में विश्वासयोग्य है।

11. इब्रानियों 13:5–6। परमेश्वर कभी आपको न भूलेगा और न त्यागेगा।

आराधना।

समूह के सदस्यों से अराधना करते समय इन वचनों का इस्तेमाल करने के लिए कहें।

अपनी प्रतिज्ञाओं तथा अपने लोगों के लिए विश्वासयोग्य होने की विशेषता के लिए परमेश्वर की आराधना करें।

आपके जीवन में विश्वासयोग्य होने के लिए परमेश्वर की अराधना करें

बड़े या तीन तीन लोगों के छोटे समूहों में होकर परमेश्वर की आराधना करें।

3	बाँटें (20 मिनट) [शान्त समय] प्रेरितों के काम 8:1–11:18

आपने जो कुछ दिये गये बाइबल अनुच्छेद (प्रेरितों 8:1–11–18) से अपने शान्त समय में सीखा है उसे संक्षेप में **बाँटें या (अपनी कॉपी में से पढ़ें)।**

बताने वाले व्यक्ति की बातों को ध्यान से सुने, उसे गम्भीरता से लें और स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

4	शिक्षा (70 मिनट) [रिश्ते] स्त्री–पुरूष के बीच रिश्ता

यह शिक्षा दोस्ती के रिश्ते में परमेश्वर को महिमा देने की लौ का नतीजा है।
कुछ व्यवहारिक बातें केवल आपको सुझाव के तौर पर प्रदान की गयी हैं, आप उनका इस्तेमाल प्रार्थना के साथ अपने समाज में कर सकते हैं।

क. किसी से प्रेम करना तथा सच्चा मसीही प्रेम

1. किसी से प्रेम करना

हम रोमांस से भरे युग में रहते हैं। लोग तुरन्त एक दूसरे के साथ घनिष्ठ समन्ध बनाना चाहते हैं। कई लोगों का मानना है कि जब उन्हें अपने सम्बन्धों में अच्छी अनुभूति या खास तौर पर जब उन्हें शारीरिक सम्बन्धों में सन्तुष्टि महसूस होने से उनका वैवाहिक जीवन अच्छा बना रहता है। फिर भी, सभी संस्कृतियों में टूटते विवाहों की भयानक बढ़ौतरी यह साबित करती है कि शारीरिक व भावनात्मक घनिष्टता के कारण रिश्ते पूर्ण नहीं होते। किसी से प्रेम होने का अर्थ है ऐसे प्रेम से है जिसके तहत एक स्त्री व पुरूष एक दूसरे के प्रति सामाजिक,शारीरिक व आत्मिक क्षेत्र में आकर्षित महसूस करते हैं। वे एक दूसरे को प्राप्त करने की चाहत रखते व स्वपन देखते हैं। वे सदैव एक दूसरे के साथ रहना और एक दूसरे को छूना चाहते हैं।

युवा अवस्था में, आपके शरीर के होर्मोन बढ़ना शुरू कर देते हैं और वे आपको अपनी उपस्थिति को एहसास करा देते हैं। आप एक व्यस्क होने से पहले ही युवावस्था में बहुत लोगों के साथ प्रेम सम्बन्ध में पड़ सकते हैं। जब कभी आपको किसी व्यक्ति से प्रेम होता है तो आप सोचते हैं कि ' यह व्यक्ति मेरा जीवन साथी होने के लिए बिल्कुल उपयुक्त व्यक्ति है''। लेकिन जब बाद में आपको पता चलता है कि दूसरा व्यक्ति पहले से बेहतर है तो आपका आकर्षण पहले व्यक्ति के प्रति कम हो जाता है, और रोमांचित करने वाली भावनाएं भी खत्म होने लगती हैं। और तभी जाकर आपको पता चलता है कि आपको भावनाओं ने आपको गुमराह किया है! किसी के साथ प्रेम करना एक सुन्दर एहसास, लेकिन बहुत बुरा सलाहकार होता है। अनुभूतियां हमेशा अनुमान रहित, अस्थिर तथा हमेशा बदलती रहती हैं। अनुभूतियां सदैव आपकी ओर इशारा करती हैं दूसरों की ओर नहीं। विवाह के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण निर्णय लेने के लिए आपको, एक स्थिर व अटल बुनियाद की ज़रूरत होती है जिसे 'अगापे प्रेम' कहा जाता है।

2.अगापे प्रेम

'अगापे' एक ग्रीक शब्द है जिसका इस्तेमाल नये नियम में 'प्रेम' के सन्दर्भ में बहुतायत से किया गया है। अगापे प्रेम सच्चा मसीही प्रेम है। परमेश्वर का स्वभाव अगापे प्रेम है (1यूहन्ना 4:8)। परमेश्वर हमें अगापे प्रेम से प्रेम करते हैं (यूहन्ना 3:16) और उन्होंने हमें अपने पड़ोसियों को अगापे प्रेम (मरकुस 12:30–31)। जब परमेश्वर हमारे हृदयों में अगापे प्रेम को डालते हैं, तब हम भी दूसरों को उसी अगापे प्रेम के साथ प्रेम करना चाहते हैं, हम लोग अगापे प्रेम के साथ दूसरों को प्रेम कर सकते हैं और हम दूसरों को अगापे प्रेम के साथ प्रेम करेगें।

अगापे (मसीही प्रेम) क्या होता है?(अध्याय 14 में बाइबल अध्ययन को देखें)
अगापे प्रेम की विशेषताएं स्पष्ट होती हैं जैसे धीरज, भलाई, संतोष,धैर्य, निःस्वार्थ भावना, क्षमा करने वाली आत्मा, सत्य, सहन शीलता, विश्वासयोग्यता तथा वफादारी (1कुरिन्थियों 13:4–8)। अगापे प्रेम निःस्वार्थ तथा आत्म–केन्द्रित–हीन प्रेम होता है। अगापे प्रेम निःस्वार्थ भावना के साथ दूसरों की उन्नति के लिए काम करता है। अगापे प्रेम दूसरों को इसलिए प्रेम नहीं करता, क्योंकि उन्हें दूसरों से कुछ प्राप्त होने वाला है, बल्कि वह दूसरों को सहयोग प्रदान करता है। वह निःस्वार्थ व कुर्बानी चढ़ाने वाला प्रेम होता है। अगापे प्रेम किसी को गिराने या तोड़ने की बजाय दूसरों की उन्नति करता है। अगापे प्रेम हर व्यक्ति को एक सम्भव उत्तम व्यक्ति बनाने में सहायता करता है। रोमांचक प्रेम अनियन्त्रित रूप में अग्रसर होता है, परन्तु अगापे प्रेम रोमाचंक प्रेम को प्रगट करने का इन्तज़ार कर सकता है। रोमांचक प्रेम मात्र एक या दो वर्षों तक ही बरकरार रहता है, जबकि अगापे प्रेम हमारे चरित्र और जीवन का स्थाई भाग बन जाता है।

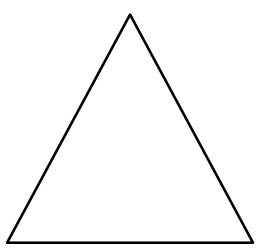
स्त्री –पुरूष के बीच सम्बन्ध का लक्ष्य शारीरिक धनिष्टता नहीं परन्तु अगापे प्रेम का फल होना चाहिए। जब दो लोग विवाह को ध्यान में रखते हुए (जिसे हम एक दूसरे के साथ 'डेटिगं' करना भी कहते हैं) एक दूसरे को जानने के लिए एक साथ एकत्रित होते हैं तो उनका लक्ष्य आपस में एक दूसरे के साथ अगापे प्रेम को मज़बूत करना होना चाहिए। इस प्रकार के सम्बन्ध में वे लोग अपने विचारों (उनके विचार व लक्ष्यों), उनकी अनुभूतियों (उनकी भावनाएं व स्वभाव) तथा उनके निर्णयों (जिनमें उनकी इच्छाएं व चुनाव शामिल हैं) को ज्यादा से ज्यादा एक दूसरे के साथ बाँटते हैं। वे आपस में अपने महत्वपूर्ण रिश्तों को, जैसे कि परमेश्वर के साथ (मसीह) उनके रिश्ते, अपने अभिभावकों के साथ उनके रिश्ते, तथा दोस्तों के साथ उनके रिश्तों को बाँटते हैं। एक स्त्री और पुरूष का एक दूसरे को घनिष्टता से जानने का मकसद एक दूसरे के साथ अगापे प्रेम को विकसित करना तथा यह जानना है कि क्या वास्तव में परमेश्वर चाहता है कि वे दोनों विवाह करें या न करें।मज़बूत अगापे प्रेम का परिणाम सच्ची मित्रता (अध्याय 16 में बाइबल अध्ययन को देखें) व घनिष्टता होती है।

ख. किसी को जानना

1. विश्वासियों के बीच में मित्रता

सम्पूर्ण मानवजाति व मानव जीवन परमेश्वर की दृष्टि में बहुमूल्य है। इससे कोई फरक नहीं पड़ता कि हम चाहे काम करते हों, अध्ययन करते हों, खेलते हो, चर्च जाते हों या दोस्तों से मिलने जाते हों। इसी कारण जिस तरह से हम अपनी समझ व अवसर का इस्तेमाल करते हैं हमारे व्यक्तित्व व हमारे कामों पर गहरा प्रभाव डालता है। हमारे विचारों (झूठ और सत्य) का हमारी अनुभूतियों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। हमारी अनुभूतियों के द्वारा हमारे कपड़े पहनने के ढंग व हमारे व्यवहार पर गहरा प्रभाव पड़ता है। हमारी आत्मा की स्थिति दूसरों के साथ हमारे व्यवहार पर गहरा प्रभाव डालती है। हमारे विचारों व भावनाओं पर गहरा प्रभाव पड़ें बिना हम शारीरिक रूप में कुछ नहीं कर सकते।

विश्वासियों (मसीहियों) के बीच मित्रता का मतलब है कि वे आपस में एक विश्वासी के रूप में (मसीही भाई बहन के रूप में) सम्बन्ध बनाकर रखते हैं। विश्वासी लोग आपस में ऐसे सम्बन्ध बनाकर रखते हैं मानों वे एक बड़ा परिवार हैं। एक दूसरे को बेहतर रूप से जानने पर विश्वासियों के बीच में विवाह के सन्दर्भ में बल्कि वैवाहिक जीवन में मज़बूत सम्बन्ध बना रहता है! विशेष मित्र होने के अलावा, वे जीवन भर एक दूसरे के लिए मसीह में भाई बहन बने रहते हैं।



विश्वासियों के बीच में मित्रता को स्थापित करने का मकसद एक दूसरे की उन्नति करना और अन्ततः कलीसिया की उन्नति करना है। इस संगति या मित्रता का मकसद कभी किसी को नीचा दिखाना नहीं है। साधारणतः विशेष प्रकार की मित्रता सामान्य रिश्तों के बीच में से ही उत्पन्न होती है। विश्वासियों की दूसरे विश्वासियों से मित्रता के बीच कुछ ज़िम्मेदारियां होती हैं।

- **एक मसीही विश्वासी होने के नाते हमारी अपने प्रति ज़िम्मेदारियां होती हैं।**

हमारे लिए नया जन्म पाना ज़रूरी है (यूहन्ना 3:3–8),हमें परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने वाला होना चाहिए (मरकुस 3:31–35), और हमें एक शिष्य के रूप में मसीह का अनुसरण करना चाहिए (लूका 9:23–26)।

- **एक मसीही विश्वासी होने के नाते हमारी एक दूसरे के प्रति ज़िम्मेदारियां हैं।**

  बाइबल हमें ध्यान देने के लिए प्रेरित करती है कि, हमारे बीच में कोई पापमय तथा अविश्वासी हृदय का व्यक्ति न हो जो जीवते परमेश्वर से फिर जाए (इब्रानियों 3:12–15)। हमें अपने आपसी रिश्तों में एक दूसरे को मसीही प्रेम तथा अपनी गतिविधियों में भले कामों को करने के लिए प्रेरित करना चाहिए (इब्रानियों 10:24–25)। हमें एक दूसरे को सिखाना और चिताना चाहिए (कुलुस्सियों 3:16)। हमें एक दूसरे के साथ मिलकर एक दूसरे के लिए प्रार्थना करना चाहिए (कुलुस्सियों 4:2 ; रोमियों 15:16)। हमें मसीही विश्वास के लिए एक साथ मिलकर संघर्ष करना तथा

एक साथ मिलकर कष्ट उठाना चाहिए (फिलिप्पियों 1:27,29)। हमें विपरीत लिंग के व्यक्ति के साथ पूर्ण पवित्रता के साथ व्यवहार करना चाहिए (1 तीमुथीयुस 5:1–2)।

- **एक मसीही विश्वासी होने के नाते हमारी उन लोगों के प्रति भी जिम्मेदारी है जो अपने विश्वास में कुटिल हैं।**

हमें बुरे लोगों से दूर रहना चाहिए (नीतिवचन 4:14–15, इफिसियों 5:7)। हमें कुटिल भाईयों व बहनों से दूर रहना चाहिए (2 थिस्लुनिकियों 3:6; 1 कुरिन्थियों 5:9–13)

- **बाइबल में प्राप्त कुछ मसीही मित्रता की विशेषताएं।**

सच्चे मित्र परमेश्वर के भी मित्र होते हैं (याकूब 4:4)। मित्र बुद्धिमानी के साथ चलते हैं (नीतिवचन 13:20)। मित्र आपस में सलाह देते व लेते हैं (नीतिवचन 27:5–6, 9–10, 17)। मित्र एक दूसरे के लिए अपने प्राण न्यौछावर करते हैं, एक दूसरे को मसीही जीवन स्तर पर खीचने का प्रयास करते हैं और जिन बातों को उन्होने परमेश्वर से सीखा होता है उन्हें खुले रूप में एक दूसरे को बताते हैं (यूहन्ना 15:13–17)।

2. विश्वासियों के बीच में मित्रता को मजबूत करने के लिए कुछ व्यवहारिक सुझाव।

यदि आपकी संस्कृति में व्यवस्थित विवाह को मान्यता दी जाती है तो होने दें कि आपके पुरनियें आपके लिए पत्नि होने के लिए किसी विश्वासी बहन को या पति होने के लिए किसी विश्वासी भाई को ढूंढ़े। तब आप विवाह के पश्चात आपस में एक दूसरे के साथ स्वस्थ मित्रता को विकसित कर सकते हैं।

यदि आपके देश में युवक व युवतियों को पवित्रता के साथ आपस में मिलने जुलने की आज़ादी दी जाती है तो निम्नलिखित बातें विवाह पूर्व मसीही युवकों व युवतियों के बीच मज़बूत रिश्ते के बनाने में सहायक होगें।

- **मसीहियों के समूह में शामिल हो जाएं।**

मसीही समूह में कुछ पुरूषों व स्त्रियों के साथ में मित्रता करने के बाद ही आप एक मसीही विश्वासी से दूसरे विश्वासी के बीच में फरक को पहिचान सकते हैं। जब आप मसीही विश्वासियों के समूह में आत्मिक तौर पर बढ़ते तथा मसीही कामों को एक साथ मिलकर अन्जाम देते हैं तब आप दो मसीही विश्वासियों के बीच ताकत या कमजोरी के फरक को पहिचान सकते हैं। एक दूसरे के व्यक्तित्व को गहराई से जानने, एक दूसरे के चरित्र, किसी व्यक्ति के दूसरे व्यक्ति पर प्रभाव तथा परमेश्वर के साथ प्रत्येक व्यक्ति के बारे में जानने के लिए हमें काफी समय देने तथा दूसरों के जीवन में शामिल होने की ज़रूरत पड़ती है।

- **मसीही समूह में अपनी बात को बताना व बाँटना सीखें।**

परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध के बारे में बात करें और बाइबल की सच्चाई को एक दूसरे के साथ बाँटें। यदि आप मसीही समूह में रहकर इन सारी बातों को करते हैं, तो आप विवाह उपरान्त भी उन सारी बातों को नियमित तौर पर कर पाएंगे।

- **मसीही समूह होने के नाते एक साथ मिलकर काम करें।**

आत्मिक गतिविधियों में भाग लें, जैसे कि बाइबल अध्ययन समूह, प्रार्थना समूह, तथा बच्चों को शिक्षा देने में भागीदार बनना। इसके अलावा आप सामाजिक गतिविधियों जैसे, सामुहिक खेल, सामुहिक रूप में भोजन करना तथा सामुहिक तौर पर बाहर घूमने चले जाना।

ग. उचित जीवन साथी का चुनाव करने के सम्बन्ध में परमेश्वर की इच्छा को पहिचानने के लिए सात सिद्धान्त

किसी दूसरे लिंग के व्यक्ति से घनिष्ट मित्रता स्थापित करने से **पहले** आपको अपने जीवन में कुछ महत्वपूर्ण निर्णयों को लेना बहुत ज़रूरी है। ये सारे सातों निर्णय बाइबल पर आधारित हैं।

1. सबसे पहले निर्णय लें कि आप विवाह करना चाहते हैं या नहीं ।

विवाह करने के क्या फायदे हैं और कुंवारा रहने के क्या फायदे हैं?

पढ़ें। 1 कुरिन्थियों 7:1–7, 32–35 (सभोपदेशक 4:9–12; यशायाह 54:1–5; मत्ती 19: 10–12)
ध्यान दें। कुवारे या अकेले रहने का फायदा यह है कि आप यीशु मसीह तथा परमेश्वर के राज्य के लिए अपना पूर्ण समर्पित समय दे सकते हैं। जिन लोगों के पास अपनी सन्ताने नहीं होतीं उनके बहुत से आत्मिक बच्चे हो सकते हैं! लेकिन अकेले रहने के नुकसान, सम्भावित अकेलापन, ज़रूरत के समय पर जीवन साथी का अभाव, तथा जीवन भर कामातुर बने रहना हैं।

एक सम्भावित अभ्यास। आप आत्मिक तथा भावनात्मक तौर पर परिपक्वता में बढ़ने, कुछ महत्वपूर्ण मसीही प्रशिक्षण प्राप्त करने या मसीही सेवकाई में कुछ महत्वपूर्ण अनुभव प्राप्त करने के लिए आप कुछ समय परमेश्वर से अकेले या कुवारे रहने की सलाह ले सकते हैं। जब परमेश्वर बाद में आपको विवाह करने की अगुवाई प्रदान करते हैं तो आप निश्चय ही अपने जीवन में अधिक परिपक्व व अनुभवी होगें। परमेश्वर अपने राज्य के कुछ विशेष कामों को पूरा करने के लिए कुछ मसीही लोगों को अविवाहित जीवन व्यतीत करने हेतू बुलाते हैं।

2. केवल किसी विश्वासी(मसीही) से ही विवाह करने का निर्णय लें।

एक मसीही जन, दूसरे मसीही से ही क्यों विवाह कर सकता है?
पढ़ें। 2 कुरिन्थियों 6:14–7:1।
ध्यान दें। बाइबल एक मसीही विश्वासी को दूसरे मसीही विश्वासी से विवाह करने की अनुमति देती है (1कुरिन्थियों 7:39; 2 कुरिन्थियों 6:14; 7:1)। ज़्यादातर एक अविश्वासी, यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले व्यक्ति को यीशु से दूर खींच लेता है (व्यवस्थाविवरण 7:3–4)। विवाहित जीवन के सम्बन्ध को यीशु मसीह व कलीसिया के बीच सम्बन्ध को प्रगट करने के लिए बनाया गया है। इसलिए मसीही जीवन में यीशु मसीह व कलीसिया का आदर करना एक महत्पूर्ण तत्व है (इफिसियों 5:22–25)।
इस्तेमालः यदि आप किसी व्यक्ति को विवाह के सन्दर्भ में गहराई से जानने का प्रयास करना चाहते हैं तो वह व्यक्ति एक विश्वासी (नया जन्म पाया हुआ मसीही) होना चाहिए।

3. केवल उसी व्यक्ति से विवाह करने का निर्णय करें जिसे आप अच्छी तरह से जानते हैं।

दूसरे व्यक्ति की सच्चाई को असल में जानने के लिए आप क्या कर सकते हैं?
नीतिवचन 27:19, 23 **पढ़ें।**
ध्यान दें। आपके लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि आप दूसरे लोगों को विशेषतौर पर उनके हृदय तथा आत्मिक परिस्थिति को जान लें। यदि आप किसी जन को ठीक से जानते तक नहीं तो उससे विवाह करने का विचार भी न करें।

सम्भावित अभ्यास। मसीह लोगों के समूह का एक हिस्सा बनें। एक दूसरे के साथ बात करना तथा आपस में बाँटना सीखें। सामुहिक रूप में कार्य करें। निम्नलिखित विशेषताओं पर ध्यान दें:
– क्या वह स्त्री या पुरूष परमेश्वर (मसीह)व दूसरों के साथ मेरे सम्बन्धों को बढ़ावा देता है?
– क्या उस स्त्री/पुरूष ने मेरे जीवन पर प्रभाव डाला तथा मेरी उच्च कोटि का जीवन व्यतीत करने में सहायता की है? क्या उस स्त्री या पुरूष ने मेरी आनन्दमय, अर्थपूर्ण या रचनात्मक जीवन व्यतीत करने में सहायता की है? क्या वह स्त्री व पुरूष मुझे अच्छा व्यवहार करने में प्रेरित करता है? क्या वह स्त्री व पुरूष कभी मुझे पाप करने के लिए तो नहीं उकसाते, बल्कि सदैव मुझे यीशु मसीह के स्वभाव के अनुसार जीवन व्यतीत करने में सहायता करते हैं?
– क्या वह मेरी बात को सुनने वाले, उसे गम्भीरता से लेने वाले तथा उसे स्वीकार करने वाले हैं?
– क्या वह मेरे लिए उपलब्ध रहने वाला तथा ऐसा जन है जिनके पास मैं सच में सहायता तथा सलाह प्राप्त करने के लिए जा सकता हूँ?
– क्या वह ऐसे जन हैं जिनके साथ मुझे अपनापन महसूस होता है तथा जिनके साथ मैं हँस सकता, रो सकता तथा गम्भीर बातों पर चर्चा कर सकता हूँ?
– क्या वे ईमानदार और सच्चे जन हैं, जो हमेशा सत्य बोलते हैं और वह दिखाने की कोशिश तो नहीं करते जो वो असल में हैं नहीं?

– क्या वह अपने दूसरे मित्रों से मेरा परिचय कराते हैं, वे मुझे अपने रिश्तेदारों से अलग रखने का प्रयास नहीं करते, वरन दूसरों के साथ में एक स्वस्थ सम्बन्ध बनाने में मेरी सहायता करते हैं?

4.केवल उसी व्यक्ति से विवाह करने का मन बनायें जो संयमी हो।

स्त्री व पुरूष के बीच संयम बनाये रखने के बारे में बाइबल हमें क्या बताती है?
इब्रानियों 13:4 को **पढ़ें।** (बाइबल अध्ययन को अध्याय 18 में पढ़ें) **खोजें व चर्चा करें।**
ध्यान दें। परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध का नतीज़ा ही संयम है(गलातियों 5:22–23)! विपरीत लिंग के लोगों में व्यवहार व हर प्रकार यौन नैतिकता में संयम का होना अनीवार्य है। जो कुछ आप अपने जीवन में बोते हैं उसकी फसल को आप अपने जीवन में बाद में जरूर काटेंगे (गलातियों 6:7–8)
सम्भावित अभ्यास। यौन सम्बन्धी अनैतिकता के प्रत्येक प्रारूप व उपद्रव से बचें। अपने देखने के प्रति संयम को बरतें अर्थात सतर्क रहें कि आप क्या देखते हैं; अपने दिमाग के प्रति संयम रखें अर्थात आप क्या सोचते हैं; अपने हाथों के प्रति संयम बरतें अर्थात आप क्या छूते हैं;इत्यादि। परमेश्वर से प्रतिज्ञा करें कि आप कभी विवाह से पूर्व या विवाह के बाहर यौन सम्बन्ध स्थापित नहीं करेंगे (इब्रानियों 13:4)। परमेश्वर ने आपको अपने जीवन साथी को उन सिद्धान्तों के आधार पर हासिल करने की आज्ञा प्रदान की है जो पवित्र और आदर के योग्य हों न कि कामुक अभिलाषाओं के द्वारा जैसा कि गैर विश्वासी लोग करते हैं (1 थिस्लुनिकियों 4:1–8)। अपने जीवन साथी को कभी चोट न पहुँचाए और न मारें। विपरीत लिंग के जन के साथ रिश्ते कायम करते समय बाइबल के आधार पर अपने रिश्तों को सीमाएं प्रदान करें।

5. जीवन में समान लक्ष्य रखने वाले व्यक्ति के साथ ही विवाह करने का निर्णय करें।

जीवन में समान लक्ष्यों को होना क्यों ज़रूरी है?
आमोस 3:3 को **पढ़ें। खोजें व चर्चा करें।**
ध्यान दें। यदि दोनों के जीवन के लक्ष्य समान नहीं हैं तो आप कभी भी एक दिशा में जीवन यात्रा नहीं कर सकते हैं (आमोस 3:3)। यीशु मसीह ने हमें सिखाया है कि हर एक मसीही के जीवन के दो प्रमुख लक्ष्य होने चाहिए: सर्वप्रथम परमेश्वर के राज्य (अपने जीवन में मसीह की प्रभुता खोजना) तथा उसकी धार्मिकता की खोजन करना (उन चीजों को मानना जिसे परमेश्वर सही ठहराता है) (मत्ती 6:33), जिसका अर्थ परमेश्वर की महिमा की खोज करना है (रोमियों 11:36)। दूसरा, एक साथ मिलकर मसीही विश्वास व मकसद के लिए एक साथ मिलकर संघर्ष करें (फिलिप्पियों 1:27; 2:2–4)।

सम्भावित अभ्यास। ध्यान से देखें कि आपके समूह में किन लोगों के जीवन के लक्ष्य आपके समान हैं। दूसरे मसीहियों के साथ बहुतायत के साथ अपने व उनके जीवन लक्ष्यों व महत्वाकाक्षाओं के बारे में बातचीत करें। अपने जीवन के लक्ष्यों को अभी प्राप्त करने का प्रयास करें।

6. केवल उसी व्यक्ति के साथ विवाह करने का निर्णय करें जिसने अपने अन्धकारमय भूतकाल को शुद्ध कर लिया हो।

अपने भूतकाल को शुद्ध करना क्यों महत्वपूर्ण है?
निर्गमन 20:5–6 के सिद्धान्तों को **पढ़ें।** 2 शमूएल 11:2–4 की तुलना 2 शमूएल 13:10–14 की तुलना करें।
2इतिहास 22:2–4 में दिये गये सिद्धान्तों को **पढ़ें।**
2 इतिहास 25:2 की 26:4 से **तुलना करें।**
ध्यान दें। निर्गमन 20:5–6 में सिखाये गये सिद्धान्त बताते हैं कि यदि आप अपनी समस्याओं को सुलझाते नहीं हैं तो आपके माता पिता (भाई और बहन, मित्र, शिक्षक और सहकर्मियों आदि) व आपके बीच अनसुलझी समस्याएं बाद में आपके जीवन तथा वैवाहिक जीवन की समस्याएं बन जाती हैं।

आपके माता पिता के बीच खराब रिश्ते किस प्रकार बाद में खुद आपके पारिवारिक रिश्तों पर प्रभाव डाल सकते हैं? उदाहरण के लिए,जिस तरह से किसी स्त्री या पुरूष ने अपने माता पिता के साथ व्यवहार किया होगा बाद में वह दूसरे

लोगों के साथ भी वैसा ही व्यवहार करेगा। जिस तरह से कोई पुरूष अपनी मां के साथ व्यवहार करता है ठीक उसी प्रकार से वह आने वाले समय में अपनी पत्नी के साथ भी व्यवहार करता है। और जिस तरह से एक स्त्री अपने पिता के साथ व्यवहार करती है ठीक उसी प्रकार से ही वह आने वाले समय में अपने पति के साथ व्यवहार करेगी।

परमेश्वर भी कभी उस व्यक्ति को क्षमा नहीं करेगा जो अपने अपराधी को क्षमा नहीं करेगा (मत्ती 6:14–15)। एक क्षमारहित व्यक्ति एक कड़वा व्यक्ति बन जाता है जो अपने साथ रहने वाले सारे लोगों को भ्रष्ट कर देता है (इब्रानियों 12:15)।
भूतकाल की समस्या व उनके नतीजों का सामना करना तथा उनका समाधान करना बहुत ज़रूरी है। टूटे रिश्तों को बहाल होना बहुत ज़रूरी है। चोटिल रिश्तों को चंगा होना बहुत जरूरी है। हमारे प्रत्येक पुराने पापों को क्षमा करने के लिए,हर एक टूटे रिश्ते का बहाल करने तथा प्रत्येक चोट को चंगा करने के लिए परमेश्वर का अनुग्रह काफी है। परमेश्वर का अनुग्रह आपकी एक स्वस्थ व परिपक्व व्यक्ति बनने, आत्मिक व भावनात्मक वृद्धि करने में सहायता करेगा।

7. सही समय आने पर विवाह करने का निर्णय लें।

ववाह के लिए सही समय का इन्तजार करना कितना सही है?
सभोपदेशक 3:5; 8:5–6 (उत्पत्ति 29:20; 1 कुरिन्थियों 7:9) **पढ़ें।**

ध्यान दें। इस धरती पर हर एक काम का एक समय होता है। लोगों को गले लगाने और गले लगाने से बचने का समय होता है। एक बुद्धिमान जन अपने विपरीत लिंग के जन के साथ व्यवहार करने के उचित समय व उचित तरीके को जानता है। जो व्यक्ति परमेश्वर पर भरोसा करता है, वह यह भी भरोसा करता है परमेश्वर उसके साथ सही समय पर सही काम होने देगा। सच्चा प्रेम धीरजवन्त होता है और वह विवाह से पूर्व प्रतीक्षा कर सकता है (1 कुरिन्थियों 13:4)

सम्भावित अभ्यास। आप पहले अपनी शिक्षा को पूर्ण कर सकते हैं। पहले आप आर्थिक रूप में अपने पैरों पर खड़े हो सकते हैं। आप विवाह करने से पहले अपने व्यवसाय में या अपनी मसीही सेवकाई में अधिक अनुभव हासिल कर सकते हैं। बहुत सी संस्कृतियों में आप दोनों पक्ष के अभिभावकों को विवाह की अनुमति प्रदान करने के लिए पर्याप्त मात्रा में समय प्रदान करते हैं।
लेकिन यदि दो मसीहियों के लिए संयम बरतना कठिन जान पड़ता हो तो, जल्दी विवाह कर लेना ज्यादा अच्छा है (1 कुरिन्थियों 7:9)। लेकिन याद रखें: मसीही विवाह पूर्ण जीवन काल के लिए होता है (मलाकी 2:14–16)।

घ.कुछ व्यवहारिक सलाह जब आप किसी से प्रेम करने लगें।

जब आपको किसी से प्रेम हो जाए तो आप सबसे पहले अपनी भावनाओं और सच्चाई में फरक को पहचाने। आपके भीतर उठने वाली उत्तेजना उसकी बाहरी सुन्दरता पर आधारित है या उसके बाहरी स्वरूप पर आधारित है या आप वास्तव में उसे प्रेम करते हैं या उसके व्यक्तित्व और चरित्र पर आधारित है? बाइबल हमें बताती है कि हमें जल्दबाज़ी करते हुए पदभ्रष्ट नहीं हो जाना चाहिए (नीतिवचन 19:2–3), बल्कि वह हमसे अनुरोध करती है कि आप सच्चाई की तह तक जाने का प्रयास करें (सभोपदेशक 7:25–26)

1. इस व्यक्ति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करें।

परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपको उसे (स्त्री या पुरूष) जानने में सहायता करे, और यदि परमेश्वर की इच्छा में वही जन है तो उसे प्रेम करने के लिए सच्चा प्रेम दें। या परमेश्वर से प्रार्थना करें कि परमेश्वर उस (स्त्री या पुरूष) के प्रति आपकी प्रेम युक्त भावनाओं को कम करे। प्रार्थना करें कि आप मात्र अपनी भावनाओं से आगे देख पाएं।

2. उस व्यक्ति को जानने का प्रयास करें।

बिना अपनी की ज़रूरत नहीं है उस स्त्री या पुरूष के प्रति अपनी भावनाओं को जाहिर किये हुए, उसके साथ विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों तथा सामूहिक गतिविधियों में शामिल हों। अवलोकन करें तथा ध्यान से सुनें। जानने का प्रयास

करें कि उसका परमेश्वर (मसीह) के साथ, दूसरों के साथ और अपने साथ किस प्रकार को सम्बन्ध है। उस स्त्री या पुरूष के व्यक्तित्व, चरित्र, उस व्यक्ति के मज़बूत या कमजोर बातों और आप व दूसरों पर उनके प्रभाव को जानने का प्रयास करें।

उस व्यक्ति की संगति में रहकर उन्नति करने व सम्पन्न होने पर ही आप जान सकते हैं कि उस व्यक्ति का आपके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा है। उदाहरण के लिएः वह कब उस पुरूष को बदला लेने के लिए रोकती है (1शमूएल 25:32–34); या वह पुरूष कब उस स्त्री की प्रतिष्ठा को (उसके मसीही चरित्र में) बढ़ाता है (इफिसियों 5:26–27)।

3. उस व्यक्ति के विषय में सलाह लें।

किसी ऐसे व्यक्ति से सलाह लें, जो परिपक्व हो और जिसका रिश्ता मसीह के साथ मज़बूत हो, और जो आप दोनों पक्षों को अच्छी तरह से जानता हो (नीतिवचन 19:20–21)। उस व्यक्ति को जानने के लिए उससे सम्बन्धित जानकारियों को हासिल करें ताकि आपको यह जानने में सहायता हो कि आपकी भावनाएं वास्तव में सच्चाई पर आधारित हैं।

4. कभी किसी अविश्वासी के साथ समय व्यतीत करने न जाएं।

फिर भी यदि आपको किसी अविश्वासी से समूह में ही मिले जिसके बारे में आप रूची रखते हैं। प्यार हो जाए तो आप उसके साथ कभी अकेले न जाएं और हर परिस्थिति में उस व्यक्ति से उचित दूरी बनाए रखें। उस (स्त्री या पुरूष को) किसी मसीह सभा में आमन्त्रित करें, उसका परिचय अपने मसीही मित्रों के साथ करें तथा उसे मसीह में जीतने का प्रयास करें। आपके लिए यह बेहतर है कि आप केवल उस अविश्वासी से ही समूह में मिलें जिसको लेकर आप रूची रखते हैं।

ड़.विवाह के सम्बन्ध में रिश्ते को मज़बूत करने का व्यवहारिक दौर

चर्चा करें। विवाह को ध्यान में रखते हुए विपरीत लिंग वाले व्यक्ति को जानने के लिए कौन से निर्देश उत्तम हो सकते हैं?

ध्यान दें। तीन व्यवहारिक स्तरों पर रिश्तों को विकसित होते देखना एक व्यवहारिक सुझाव व निर्देश हो सकता हैः अर्थात जान पहचान का दौर, मुलाकात का दौर, मंगनी का दौर। हर एक दौर की स्पष्ट शुरूआत और स्पष्ट अन्त, एक स्पष्ट लक्ष्य और एक मकसद तक पहुँचने के लिए स्पष्ट व्यवहारिक कदम होते हैं।

1. जान–पहचान का दौर

जान पहचान के दौर का मतलब

बिना नज़दीकी बनाये हुए एक दूसरे के बारे में जानकारी हासिल करना।

जान पहचान के दौर का उद्देश्य।

आपकी यह निर्णय लेने में सहायता करने के लिए तथ्यों को इकट्ठा करना कि आप उस व्यक्ति के साथ सम्बन्धों को आगे बढ़ाना चाहते हैं या नहीं।

जानकारी हासिल करने का तरीका

जब आपको किसी से सच में प्यार हो जाता है या आप किसी व्यक्ति में सच में रूची रखते हैं तो आप निम्नलिखित कामों को कर सकते हैंः

- अपनी भावनाओं व सच्चे मसीही प्रेम के बीच फरक को पहचाने।
- ऐसे व्यक्ति से सलाह लें जो आपको व दूसरे पक्ष को अच्छी तरह से जानता हो।
- उस व्यक्ति (स्त्री या पुरूष) से पूछें कि क्या वह चाहता या चाहती है की आप एक दूसरे को धनिष्टता से जानें। (कई संस्कृतियों में लड़की कभी पहल नहीं करती है।)
- यदि व जन तैयार हो जाते हैं तो एक दूसरे के साथ विशेष समय पर व किसी खास सार्वजनिक स्थल पर मिलने की योजना बनाएं, उदाहरण के लिए, एक दूसरे को जानने के लिए सप्ताह में एक बार किसी खास भोजनालय में सप्ताह में एक बार करीब छः माह तक मिलें।

जान पहचान बढ़ाने के दौरान की जाने वाली कुछ व्यवहारिक गतिविधियां।

- जितना हो सके एक दूसरे के बारे में जानने की कोशिश करें। एक दूसरे का परमेश्वर के साथ सम्बन्ध, मसीही विश्वास, आकांक्षाएं, व विशिष्टताओं को जानने का प्रयास करें।
- सयंम बरतने के क्षेत्र में कुछ व्यवहारिक सलाहें निम्नलिखित है (गलातियों 5:22)

कोई शारीरिक सम्बन्ध नहीं। यह बहुत अच्छा होगा कि आप कोई शारीरिक सम्बन्ध न बनाएं, क्योंकि ऐसा करने के द्वारा आप अपने भीतर उठने वाली उंमग को नियन्त्रित कर सकते हैं। आप अपनी समझ के अनुसार निर्णय लेने के लिए स्वतन्त्र महसूस कर पायेंगे।

किसी प्रकार की सहमति स्थापित न करें। आधिकारिक तौर पर किसी भी बात का करार न करें–आप इस समय पर एक अच्छे मित्र को छोड़ और कुछ नहीं हैं। यह भी अच्छा है कि आप अपने मित्र से कुछ निश्चित अपेक्षाओं को न करें। 'मित्रता' के विषय में चर्चा करें, निर्णायक सहमति हो जाने के बाद 'मुलाकात' के तौर पर नहीं। इसके द्वारा आप अपने दोस्तों द्वारा आप पर डाले जाने वाले दबाव को कम कर सकते हैं।

अपनी भावनाओं को प्रगट न करें। एक दूसरे को लेकर कोई काल्पनिक कहानी न बनाना, एक दूसरे के प्रति उठने वाली उंमग के बारे में बात न करना और न ही अपनी भावनाओं को एक दूसरे पर जाहिर करना इस समय के लिए अच्छा है। इन बातों को प्रगट करने के सही समय आने का इन्तज़ार करें। यदि आप एक दूसरे के प्रति अपनी भावनाओं और उमंग के बारे में बात करने की जल्दी करते हैं तो आप खुद अस्वाभाविक अपेक्षाओं को जन्म देते हैं, जिसके कारण एक सच्चे आत्मिक रिश्ते को बनने में दिक्कत होगी और जिसके कारण बाद में दूसरे जन को चोट पहुंचेगी।

विवाह के सम्बन्ध में कोई बात न करें। बहुत अच्छा रहेगा कि इस समय आप विवाह के सम्बन्ध में या विवाह सम्बन्धित किसी योजना के बारे में बात न करें। क्योंकि ऐसा करने से भी आपके बीच में अनापेक्षित अपेक्षाएं उत्पन्न होगी। कुछ समय के लिए आप केवल एक अच्छे दोस्त से बढ़कर और कुछ नहीं हैं।

जान पहचान के दौर को खत्म करना

यह दौर तब खत्म हो जाता है जब आपको या दोनों पक्षों को यह महसूस होने लगता है कि इस तरह से मिलना उचित नहीं है। लेकिन यदि आप दोनों पक्ष इस मित्रता को एक रिश्ते का नाम देने के लिए सहमत हो जाते हैं तो आप इस दौर को 'मुलाकात' के दौर की ओर ले जा सकते हैं।

2.मुलाकात का दौर।

मुलाकात के दौर का अर्थ।

मुलाकात के दौर का अर्थ, एक दूसरे की नज़रों में आदर व आकर्षण को प्राप्त करना तथा विवाह की पूर्ण सम्भावना को ध्यान में रखते हुए मित्रता को मज़बूत करना है।

मुलाकातों का मकसद

यह जानना कि क्या आप दोनो का विवाह होना परमेश्वर की इच्छा है (इफिसियों 5:17)। यह जानना कि वहां पर विवाह के सम्बन्ध में बंधने के लिए पर्यान्त बुनियादी तत्व मौजूद हैं।

मुलाकात करने का तरीका

एक दूसरे व अन्य लोगों के सामने स्पष्ट करें कि आप एक दूसरे को पसन्द करते हैं और इस दौरान विवाह की योजना बना रहे हैं। होने दें कि आपकी मुलाकात खुले रूप में हों और जो कुछ हो वह सहमति के साथ सीमाओं के दायरे में हो।

मुलाकात के दौर में की जाने वाली कुछ व्यवहारिक गतिविधियाँ।

- मुलाकात के दौरान अपने रिश्ते के लिए कुछ सीमाओं को निर्धारित करें। ये सीमाएं बाइबल में दिये गये सिद्धान्तों पर आधारित हों। निम्नलिखित क्षेत्रों में सीमाओं को निर्धारित करना:

समय:कितनी बार और कितने समय के लिए आप मिलेंगे? शाम को किस समय आपको अपने धर वापस चले जाना चाहिए ?

स्थान: आप एक दूसरे को कहां पर मिलते हैं? आपने किस जगह पर न जाने का निर्णय किया है?

शारीरिक सम्बन्धः किस प्रकार का शारीरिक सम्बन्ध परमेश्वर की नज़रों में उचित है, आपके समाज में ग्रहणयोग्य और एक दूसरे की उन्नति करने वाला है? किसी प्रकार की शारीरिक मुद्रा से आप बचना चाहते हैं?इस विषय पर आपके लिए एक सहमति बनाना बहुत जरूरी है?

गतिविधियाँः आप किन कामों को एक साथ मिलकर करते हैं? आपने किन कामों को नहीं करने का निर्णय किया है?

- परमेश्वर की उपस्थिति में होकर वायदा करें (परमेश्वर को अपना गवाह मानकर) कि आप कभी भी अपने स्तर को गिरने नहीं देंगे बल्कि एक दूसरे को अपने स्तर को बनाये रखने के लिए उत्साहित करेंगे (1 थिस्लुनिकियों 4:3–8)
- एक दूसरे को आत्मिक रीति से बढ़ने के लिए उत्साहित करें। एक दूसरे को प्रेरित करें। मिलकर परमेश्वर की सेवा करें। दूसरे स्त्री व पुरूषों के साथ मिलकर नये मित्र बनाएं।
- विवाह की योजना पर केवल तभी चर्चा करें जब आप विवाह करनें के लिए सहमत हों। नहीं तो आप केवल तनाव उत्पन्न करने वाली अपेक्षाओं को उत्पन्न करेंगे और ऐसे वायदे कर लेगें जिसे आप कभी पूरा नहीं कर सकते।

मुलाकात के दौर व रिश्ते की समाप्ति

यह दौर तब खत्म हो जाता है जब आप या दोनो यह महसूस करते हैं कि अब हमें नहीं मिलना चाहिए। उसके बाद आप निर्णय लेते हैं कि आप अब कभी एक दूसरे से नहीं मिलेंगे या सिर्फ एक दूसरे के अच्छे मित्र बने रहेंगे। यह काफी दुःखदायी हो सकता है, लेकिन बाद में तलाक होने की तुलना में यह दुःख कम है। लेकिन यदि आप सुनिश्चित हो जाते हैं कि वास्तव में यह परमेश्वर की इच्छा है कि आप दोनों विवाह करें, तो आप मग्नी कर सकते हैं। चाहे आपकी मंग्नी हो या न हो, आपको मिलकर विवाह की योजना व विवाह के दिन का चुनाव कर लेना चाहिए।

3. मग्नी का रिश्ता व दौर

मग्नी का रिश्ता।

मंग्नी का अर्थ है कि आपने विवाह करने की इच्छा जाहिर कर दी है और अभी आप विवाह की तैयारी व विवाह के दिन का चुनाव करने में व्यस्त हैं। इसका अर्थ है कि विवाह के सन्दर्भ में आप अब किसी और के लिए खाली नहीं हैं।

मंग्नी का मुख्य उद्देश्य।

आपके होने वाले विवाह व विवाह के दिन की तैयारी करना।

मंग्नी करने का तरीका।

- एक दूसरे से विवाह करने के लिए प्रतिज्ञा करना।
- विवाह की तारीख तय करना तथा विवाह की तैयारी के लिए एक पुख्ता योजना बनाना बहुतायत से सहायक रहता है।
- यदि आप अपने परिवार जनों के साथ मिलकर अपनी मंग्नी के उत्सव को मनाते हैं तो उन सबको बहुत खुशी होगी।
- विवाह के लिए तुरन्त तैयारी प्रारम्भ करना और तैयारी के समय सीमा को निर्धारित करना आपके लिए सहायक रहेगा। ऐसा करने से आप किसी परीक्षा में नहीं पड़ेगें।

मंग्नी के दौर की व्यवहारिक गतिविधियाँ।

- एक साथ जीवन व्यतीत करने तथा एक साथ काम करने के प्रति अपनी अपेक्षाओं पर चर्चा करें। अपने रिश्ते से सम्बन्धित हर एक क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण अपेक्षाओं की चर्चा करें। उदाहरण के लिए अपने भावी घर व जीवन–शैली को लेकर, अपनी भावी कलीसिया और परमेश्वर की सेवा के लिए, अपने मायके व ससुराल वाले रिश्तेदारों के लिए, आपकी नौकरी के लिए, अपनी आर्थिक परिस्थिति, यौन सम्बन्ध व बच्चों की योजना को लेकर चर्चा करें। आप किसी गुप्त बात को न छुपाएं। यदि आवश्यक हो तो अपने बीते जीवन के बुरे अनुभवों को भी बताएं, एक दूसरे के सामने अपने पापों को मान लें तथा एक दूसरे के अपराधों को क्षमा करें।(याकूब 5:16)

- सहमति बनायी गयी शारीरिक सीमाओं को बनाये रखें। आप दोनों पक्षों को विवाह के दिन के आने तक अधिक संयम व एक दूसरे के प्रति पवित्र बने रहने के समपर्ण को बनाये रखना होगा।
- आपके लिए अच्छा रहेगा कि आप विवाह की योजना बनाते समय अपने माता पिता वा अगुवा को भी अपने साथ शामिल कर लें।

मंग्नी के दौर की समाप्ति।

यह दौर तब खत्म हो जाता है जब दोनों पक्ष यह महसूस करते हैं कि अब उन्हें इस रिश्ते को हमेशा के लिए समाप्त कर देना चाहिए। हांलाकि यह दौर काफी हद तक दुःखदायी होता है लेकिन बाद तलाक होने से अभी यह रिश्ता टूट जाना बेहतर है। लेकिन यदि आप को ऐसा महसूस होता है कि अब आपको विवाह कर लेना चाहिए, तो आप विवाह करें और विवाह उत्सव का आनन्द मनाएं।

5	**प्रार्थना** (8मिनट)	[प्रतिक्रिया] परमेश्वर को प्रतिउत्तर देते हुए प्रार्थना करें

जो कुछ आपने आज सीखा है उसके प्रतिउत्तर में **अपनी बारी आने पर** समूह में छोटी **प्रार्थना करें।**
या दो और तीन के झुण्डों में बंटकर, आज जो कुछ आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	[निर्धारित कार्य] अगले अध्याय के लिए

(***समूह का अगुवा*** *:* समूह के सदस्यों को यह तैयारी गृह कार्य के रूप में लिखित तौर पर प्रदान करें या उन्हें डाउन लोड करने दें।)

1. **<u>सर्मपणः</u>** चेले बनाने के लिए समर्पित हों।

किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के जन के साथ 'स्त्री व पुरूष के बीच रिश्ते' बाइबल पर आधारित शिक्षाओं को पढ़ें, सिखाये या प्रचार करें।

2. <u>परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना।</u> प्रेरितों के काम 11:19—14:28 तक रोज एक अध्याय पढ़ते हुए परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताएं। पसन्दीदा सच्चाई के तरीके का इस्तेमाल करें। लिखें।
3. <u>बाइबल अध्ययन।</u> अगली बाइबल अध्ययन की घर ही में तैयारी करें। 1 थिस्लुनिकियों 4:18। विषयः ' विपरीत लिंग के लोगों के साथ किस प्रकार से सम्बन्ध को मसीही कहा जा सकता है। बाइबल अध्ययन के पांच कदमों वाली पद्धति को इस्तेमाल करें। मुख्य बातों को लिखें।
4. <u>प्रार्थनाः</u> किसी व्यक्ति या किसी विशेष बात के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहे हैं (भजन 5:3)
5. चेलों को बनाने के सम्बन्ध में <u>वर्तमान स्थिति को किसी कॉपी में लिखें</u>। जिसमें आराधना के गीत, शिक्षा तथा तैयारी की सामग्री को भी लिख सकते हैं।